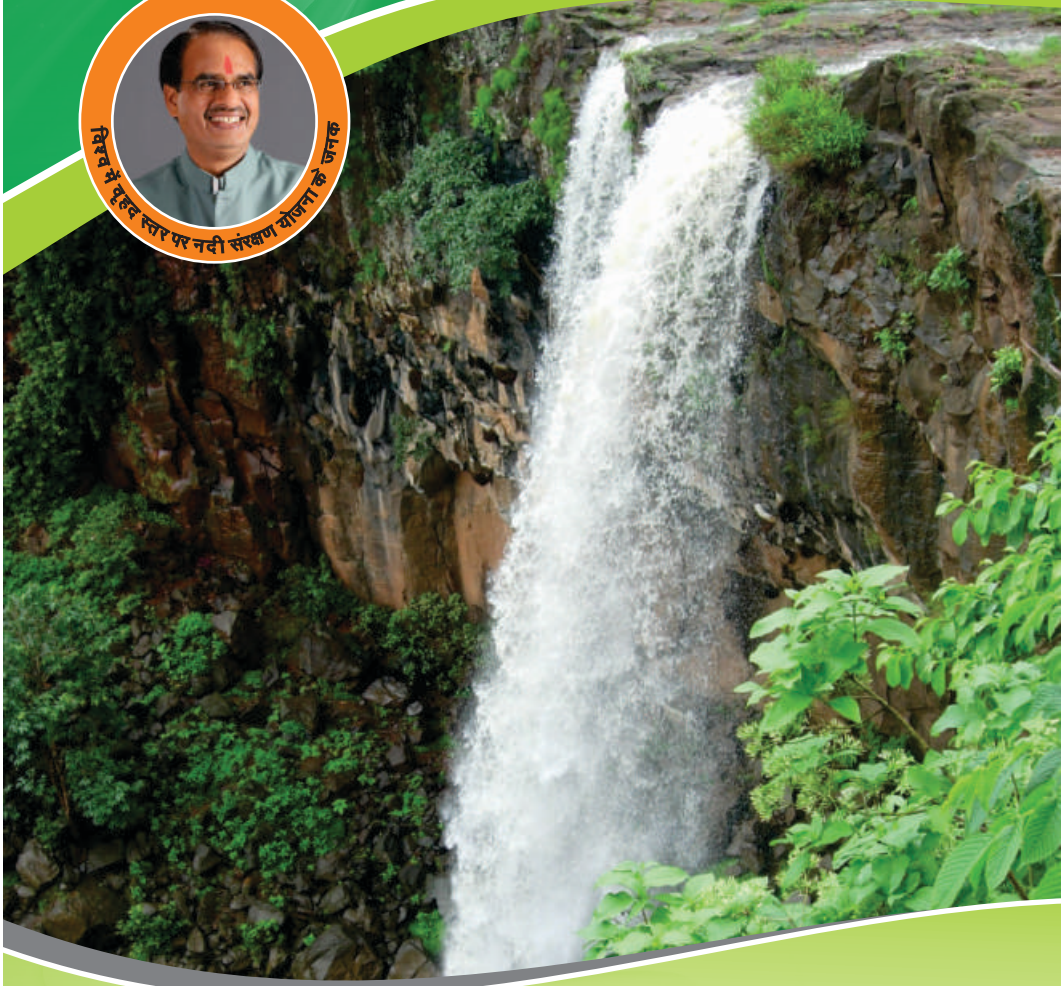


विस्तार पत्रिका क्रमांक: 50

॥ नमामि देवी नर्मदे ॥

नर्मदा तट पर वृक्षारोपण हेतु उपयुक्त प्रजातियाँ एवं रोपण विधियाँ



राज्य वन अनुसंधान संस्थान
जबलपुर (म.प्र.) - 482008
वर्ष 2017





यह विश्व सुरक्षित रहे, यह पृथ्वी भारत मे जिसे माँ कहा गया है उसका संरक्षण, उसका संवर्धन हर पीढ़ी का दायित्व है। हमारे पूर्वजो ने हमारे लिये जो किया हमारी जिम्मेदारी है कि आगे आने वाली पीढ़ी के लिये हम कुछ करके जाये।

मध्य प्रदेश की कृषि विकास दर 20 प्रतिशत से अधिक है तो इसमें नर्मदा नदी का ही योगदान है।

माँ नर्मदा ने अब तक हमें बचाया है। अब समय आ गया है कि हम माँ नर्मदा को बचायें एवं नर्मदा नदी के दोनों तटों पर वृक्षारोपण करें।

श्री नरेन्द्र मोदी, माननीय प्रधानमंत्री

नर्मदा तट पर वृक्षारोपण हेतु उपयुक्त प्रजातियाँ एवं रोपण विधियाँ

संकलनकर्ता

डॉ. उदय होमकर
डॉ. एस. के. मसीह
के. एल. वर्मा



राज्य वन अनुसंधान संस्थान
जबलपुर (म.प्र.) - 482008
वर्ष 2017





॥नमामि देवी नर्मदे॥

वर्ष - 2017

प्रचार-प्रसार पत्रिका क्रमांक -50

संकलनकर्ता :

डॉ. उदय होमकर

डॉ. एस. के. मसीह

के. एल. वर्मा

प्रकाशन :

संचालक, राज्य वन अनुसंधान संस्थान

जबलपुर (म.प्र.) - 482008

मुद्रक :

अमृत ऑफसेट, मढ़ाताल, जबलपुर (म.प्र.)

फोन- 0761-2413943





॥नमामि देवी नर्मदे॥

डॉ. गौरीशंकर शेजवार
मंत्री
वन, योजना, आर्थिक एवं
सांख्यिकी विभाग



बी-10, चार इमली, भोपाल
दूरभाष: मंत्रालय : 0755-2430011
निवास : 0755-2441377
निवास : 0755-2441081



संदेश

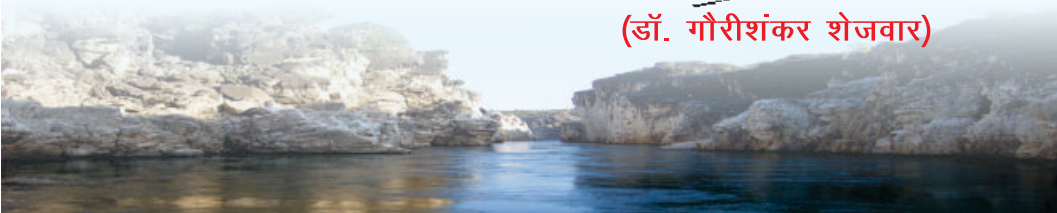
मध्यप्रदेश प्राकृतिक संपदा से सम्पन्न प्रदेश है। मध्यप्रदेश के विकास में प्राकृतिक धरोहर के रूप में नर्मदा नदी का विशेष स्थान है। नर्मदा नदी देश की पांचवी सबसे बड़ी नदी है एवं इसकी जलधारा की निरंतरता इसके जलग्रहण क्षेत्रों में पर्वत एवं वन क्षेत्रों के जलशोषण क्षमता के कारण बनी रहती है।

विकास कार्यों, बढ़ते जैविक दबाव तथा जलवायु परिवर्तन के कारण नर्मदा जलग्रहण क्षेत्र के वन प्रभावित हो रहे हैं, जिससे भविष्य में नर्मदा जलधारा की निरंतरता पर इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। नर्मदा नदी "मध्यप्रदेश की जीवन रेखा है", के जल को प्रदूषण रहित एवं निरंतर बनाये रखने की दृष्टि से नर्मदा नदी के दोनों तटों पर वृहद् स्तर पर वृक्षारोपण करने का लक्ष्य रखा गया है।

वृक्षारोपण के दौरान प्रतिभागियों को वृक्षारोपण संबंधी जानकारी देने के उद्देश्य से राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में रोपित किये जाने वाली प्रजातियों के रोपण की जानकारी सरल भाषा में संकलित की गई है।

मैं आशा करता हूँ कि राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा संकलित यह पुस्तिका इस वृहद् वृक्षारोपण कार्यक्रम को सफल बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होगी।

(डॉ. गौरीशंकर शेजवार)





॥नमामि देवी नर्मदे॥



संदेश

भारतवर्ष का हृदय मध्यप्रदेश, वन एवं प्राकृतिक संपदा से सम्पन्न प्रदेश है। मध्यप्रदेश के प्राकृतिक एवं आर्थिक विकास में नर्मदा नदी की उल्लेखनीय भूमिका है। इसकी सतत् प्रवहनीयता जलग्रहण क्षेत्र की पारिस्थितकीय तंत्र पर निर्भर है।

मध्यप्रदेश शासन की “नमामि देवी नर्मदे” यात्रा के दौरान नदी के दोनो तटों के विकास, संरक्षण एवं संवर्धन कार्यों को ध्यान में रखते हुए जन भागीदारी से वृहद् स्तर पर वृक्षारोपण करने का लक्ष्य रखा गया है जिससे नर्मदा नदी के जलग्रहण क्षेत्र की पारिस्थितकीय तंत्र में सुधार होगा एवं बारिश का पानी धीरे-धीरे जमीन में रिस कर नदी की जलधारा की निरंतरता को बनाये रखेगा साथ ही नर्मदा नदी के तटों से मिट्टी के कटाव को रोकने में भी सहायता मिलेगी।

नर्मदा नदी के तटों पर विभिन्न प्रकार की मिट्टियाँ पायी जाती है जिसे ध्यान में रखते हुए वृक्षारोपण के दौरान प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में रोपित किये जाने वाली प्रजातियों के रोपण की जानकारी सरल भाषा में देने के उद्देश्य से राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा यह पुस्तिका संपादित की गई है।

मुझे विश्वास है कि राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा संपादित यह पुस्तिका बड़े पैमाने पर वृक्षारोपण कार्यक्रम को सफल बनाने में पथ प्रदर्शित करेगी।

(दीपक खाण्डेकर) भा.प्र.से.

अपर मुख्य सचिव (वन)

म.प्र. शासन





॥नमामि देवी नर्मदे॥



संदेश

राष्ट्रीय वन नीति 1988 एवं राज्य वन नीति 2005 के उद्देश्यों के अनुरूप म.प्र. का वन आवरण 33 प्रतिशत किये जाने का लक्ष्य है। पौधारोपण, वनीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कड़ी एवं पहला कदम है। पौधा रोपण कार्यक्रम को सफल बनाने में जितना महत्व स्वस्थ पौधों का होता है उतना ही महत्व पौधे को सही तरीके से रोपित करने की विधि का भी होता है।

वन विभाग एवं अन्य संस्थाओं द्वारा समय-समय पर वृक्षारोपण के कार्यक्रम किये जाते रहे हैं। वृक्षारोपण करने वाले व्यक्ति/संस्था को पौधा रोपण की सही विधि का ज्ञान होना आवश्यक है, जिससे उनके द्वारा किये गये रोपण को अधिकतम सफलता प्राप्त हो सके।

जन-भागीदारी से विश्व में सबसे बड़े नदी संरक्षण अभियान के तहत नर्मदा नदी के तटों को प्रदूषण मुक्त रखने हेतु म.प्र. शासन संकल्पित है। नर्मदा नदी के शुद्ध जल प्रवाह को निरंतर बनाये रखने हेतु दोनों तटों पर शासकीय एवं अशासकीय भूमि पर वृक्षारोपण किया जाना प्रस्तावित है।

वृक्षारोपण कार्यक्रम को ध्यान में रखते हुए नर्मदा नदी के दोनों तटों पर विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में लगाये जाने वाले वृक्षों के रोपण की जानकारी आम जनता तक सरल भाषा में पहुँचाने के उद्देश्य से राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर द्वारा इस पुस्तिका का संपादन किया गया है।

आशा है कि वृक्षारोपण में संलग्न सभी प्रतिभागी इस जानकारी से लाभान्वित होंगे एवं वृक्षारोपण को सफल बनाने में अपना सक्रिय योगदान देंगे।

(डॉ. अनिमेष शुक्ला) भा.व.से.

प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं

वन बल प्रमुख

मध्यप्रदेश, भोपाल





॥नमामि देवी नर्मदे॥



प्रस्तावना

वृक्षारोपण, वनीकरण की दिशा में किया गया महत्वपूर्ण कदम होता है। भूमि के आधार पर उपयुक्त वृक्ष प्रजातियों का चयन करना अतिआवश्यक है। साथ ही वृक्षारोपण हेतु चयनित प्रजातियों की आयु एवं ऊँचाई का भी वृक्षारोपण की सफलता में महत्वपूर्ण योगदान होता है।

पौधों के रोपण में गड्ढों का आकार, गड्ढों में डाली जाने वाली मिट्टी एवं खाद् की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर विगत कई वर्षों से पौधों की रोपणी एवं रोपण संबंधी विषयों पर अनुसंधान कार्य कर रहा है। रोपण संबंधी समस्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए संस्थान ने नर्मदा नदी के तटों पर विभिन्न प्रकार की मिट्टियों में लगाये जाने वाले वृक्षों के रोपण तकनीक की जानकारी सरल भाषा में संकलित की है, जिसमें किसी भी वृक्षारोपण कार्यक्रम के प्रतिभागी व्यक्तियों/संस्थाओं को रोपण संबंधी जानकारी सरलता से प्राप्त हो सकेगी।

(डॉ. धर्मेन्द्र वर्मा), भा.व.से.

संचालक

राज्य वन अनुसंधान संस्थान

जबलपुर (म.प्र.)





॥नमामि देवी नर्मदे॥

विषय सूची

| विषय | पृष्ठ क्रमांक |
|-------------------------------------------------|---------------|
| नर्मदा तट पर वृक्षारोपण हेतु उपयुक्त प्रजातियाँ | |
| परिचय | 01 |
| वृक्षारोपण हेतु ध्यान में रखने योग्य बातें | 03 |
| 1) सीताअशोक (<i>Sarraca indica</i>) | 06 |
| 2) अमलतास (<i>Cassia fistula</i>) | 07 |
| 3) अचार (चिरौंजी) (<i>Buchanania lanzan</i>) | 07 |
| 4) आंवला (<i>Emblica officinalis</i>) | 07 |
| 5) अंजन (<i>Hardwickia binata</i>) | 07 |
| 6) इमली (<i>Tamarindus indica</i>) | 08 |
| 7) करंज (<i>Pongamia pinnata</i>) | 08 |
| 8) काला सिरस (<i>Albizia lebbek</i>) | 08 |
| 9) कचनार (<i>Bauhinia variegata</i>) | 08 |
| 10) खमेर (<i>Gmelina arborea</i>) | 09 |
| 11) खैर (<i>Acacia catechu</i>) | 09 |
| 12) गूलर (<i>Ficus glomerata</i>) | 09 |
| 13) चिरौल (<i>Holoptelea integrifolia</i>) | 09 |
| 14) जामुन (<i>Syzygium cumini</i>) | 10 |
| 15) तिन्सा (<i>Ougeinia oojeinensis</i>) | 10 |
| 16) नीम (<i>Azadirachta indica</i>) | 10 |
| 17) पारस पीपल (<i>Thespesia pypulnea</i>) | 10 |
| 18) पीला कनेर (<i>Thevetia neriifolia</i>) | 11 |
| 19) पीपल (<i>Ficus religiosa</i>) | 11 |
| 20) बबूल (<i>Acacia nilotica</i>) | 11 |
| 21) बांस (<i>Dendrocalamus strictus</i>) | 11 |



॥नमामि देवी नमदे॥

| विषय | पृष्ठ क्रमांक |
|--------------------------------------------------|---------------|
| 22) बीजा (<i>Pterocarpus marsupium</i>) | 12 |
| 23) बेर (<i>Zizyphus jujuba</i>) | 12 |
| 24) बरगद (<i>Ficus bengalensis</i>) | 12 |
| 25) महुआ (<i>Madhuca latifolia</i>) | 13 |
| 26) महारूख (<i>Ailanthus excelsa</i>) | 13 |
| 27) मुनगा (<i>Moringa pteryosperna</i>) | 13 |
| 28) मौलश्री, मोलसरी (<i>Mimusops elengii</i>) | 13 |
| 29) रेऊंझा (<i>Acacia leucophloea</i>) | 14 |
| 30) लेंडिया (<i>Lagerstoemia parviflora</i>) | 14 |
| 31) शीशम (रोजवुड) (<i>Dalbergia latifolia</i>) | 14 |
| 32) सफेद सिरस (<i>Albizzia procera</i>) | 14 |
| 33) सागौन (<i>Tectona grandis</i>) | 15 |
| 34) साजा (<i>Terminalia tomentosa</i>) | 15 |
| 35) सेमल (<i>Bombax ceiba</i>) | 15 |
| 36) सिस्सू (<i>Dalbergia sissoo</i>) | 15 |
| 37) सीताफल (<i>Annona squamosa</i>) | 16 |
| 38) हर्रा (<i>Terminalia chebula</i>) | 16 |
| 39) बहेड़ा (<i>Terminalia belerica</i>) | 16 |
| 40) कूल्लू (<i>Sterculia uiens</i>) | 16 |
| 41) अर्जुन (<i>Terminalia arjuna</i>) | 17 |
| 42) कदम (<i>Anthocephalus cadamba</i>) | 17 |
| 43) कपोक (<i>Cieba pentandra</i>) | 17 |
| 44) बेल (<i>Aegle marmelos</i>) | 17 |
| 45) मैदा छाल (<i>Litsea glutinosa</i>) | 18 |





नर्मदा तट पर वृक्षारोपण हेतु उपयुक्त प्रजातियाँ

परिचय

नर्मदा नदी मध्यप्रदेश के हृदय स्थली में बहने वाली भारत की 5वीं सबसे लम्बी नदी है। इसका उद्गम मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले के अमरकंटक से लगभग 3500 फीट समुद्र तल की उंचाई से आरम्भ होकर मध्यप्रदेश के उत्तरी पहाड़ी कृषि जलवायु क्षेत्र (अनूपपुर, डिण्डोरी, मण्डला जिले), विंध्य पठार कृषि जलवायु क्षेत्र (सिहोर, रायसेन जिले), मध्य नर्मदा घाटी कृषि जलवायु क्षेत्र (जबलपुर, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, हरदा जिले), मालवा का पठार कृषि जलवायु क्षेत्र (बड़वानी, धार जिले), निमाड़ का मैदान कृषि जलवायु क्षेत्र (पूर्व निमार, पश्चिम निमार जिले), झाबुआ की पहाड़ियाँ कृषि जलवायु क्षेत्र (अलीराजपुर जिला) में प्रवाह करते हुए गुजरात में प्रवेश करती है।

नर्मदा नदी की कुल लंबाई लगभग 1310 कि.मी. है जिसका कुल जल भरावन क्षेत्र अनुमानित 36000 वर्ग मील है। यह नदी दोनों किनारों पर स्थित लगभग 1000 गांव से होकर गुजरती है। इस नदी से लगभग 766 नहरें एवं 100 सहायक नदियाँ जुड़ी हुई हैं। इसके दोनो तटों पर लगभग 161 दर्शनीय स्थान एवं 290 मंदिर हैं। इस नदी के दोनों तटों पर 65000 वर्ग मील वन क्षेत्र अच्छादित है, जिसमें विभिन्न प्रकार के वृक्ष एवं महत्वपूर्ण औषधीय प्रजातियों का भंडार है।

नर्मदा नदी के दोनों तटों से लगी हुई शासकीय, अशासकीय एवं कृषि भूमि पर पाई जाने वाली विभिन्न प्रकार की मिट्टी (मृदा) एवं इन पर वृक्षारोपण हेतु उपयुक्त प्रजातियाँ निम्नलिखित तालिका में दर्शाई गई है। इसके साथ ही ऐसी प्रजातियाँ जो कि भूमि के कटाव एवं भू-क्षरण को रोकने में सहायक होंगी, का भी उल्लेख किया गया है:-





तालिका 1- विभिन्न प्रकार की मिट्टी में वृक्षारोपण हेतु उपयुक्त प्रजातियाँ

| क्र. | मिट्टी का प्रकार | वृक्षारोपण हेतु उपयुक्त प्रजातियाँ | भू-जल संरक्षण हेतु |
|------|------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------|
| 1 | काली मिट्टी | काला सिरस, सफेद सिरस, बबूल, करंज, साजा, शीशम, नीम, अर्जुन, अंजन, खमेर, बड़, पीपल, बेल, मोलसरी, इमली, सीताअशोक, जामुन, कचनार, मुनगा, बेर महुआ, पारस पीपल, लेंडिया, सिस्सू, आवला, बीजा, बांस, शीशम, सेमल, गूलर, कुल्लू, चिरौल, हर्रा, बहेड़ा, अमलतास | बबूल, खैर, बेर, सवाई घास, दीनानाथ घास |
| 2 | पीली बालूमय | सागौन, काला सिरस, सफेद सिरस, बांस, करंज, नीम, बीजा, लेंडिया, सिस्सू, चिरौल, बबूल, खमेर, बड़, पीपल, अर्जुन, बेल, मोलसरी, इमली, अशोक, महुआ, जामुन, बेर, आवला, कदम, कपोक | बबूल, खैर, बेर, बांस, सवाई घास |
| 3 | लाल-भूरी मिट्टी | सागौन, खमेर, शीशम, काला सिरस, करंज, नीम, बांस, सिस्सू, बबूल, बड़, पीपल, अर्जुन, बेल, मोलसरी, इमली, सीताअशोक, महुआ, जामुन, मुनगा, आवला, अंजन, कुल्लू, महारुख, कदम | बबूल, बेर, पीला कनेर |
| 4 | कछारी जलोढ़ | काला सिरस, सफेद सिरस, नीम, करंज, बबूल, साजा, सिस्सू, अर्जुन, जामुन, सीताअशोक, बांस, सागौन, खमेर, बड़, पीपल, सीताफल, अंजन, कचनार, गूलर | बबूल, खैर, बांस, सवाई घास, दीनानाथ घास |
| 5 | मुरमी | रेऊंझा, खैर, बेर, नीम, सिस्सू, बबूल, बांस, बेल, पीपल, अर्जुन, सीताफल, आवला, सागौन, लेंडिया, कचनार, तिन्सा, कुल्लू, कदम, महारुख, अमलतास | खैर, रेऊंझा, बेर, सीताफल |
| 6 | जलोढ़ मिट्टी | काला सिरस, सफेद सिरस, सिस्सू, बबूल, नीम, करंज, खमेर, बांस, अंजन, महारुख, लेंडिया, साजा, सेमल, जामुन, अर्जुन, चिरौल, अशोक, बांस, पीला बांस, सागौन, गूलर, बड़, पीपल, बेल, इमली, महुआ, आवला, बेर, पारस पीपल | बबूल, रेऊंझा, खैर, बांस, सवाई घास, दीनानाथ घास |
| 7 | गहरे लाल रंग की मिट्टी | सागौन, नीम, काला सिरस, बांस, सिस्सू, लेंडिया, करंज, सफेद सिरस, बबूल, बड़, पीपल, अर्जुन, बेल, सीताअशोक, इमली, महुआ, आवला, मुनगा, सीताफल | खैर, रेऊंझा |
| 8 | रेतीली दोमट | सिस्सू, लेंडिया, चिरौल, बांस, बीजा, पीला कनेर, सिस्सू, हर्रा, कुल्लू, खमेर, सफेद सिरस, बबूल, बड़, पीपल, अर्जुन, बेल, सीताअशोक, इमली, महुआ, आवला, अचार, बेर, जामुन, मुनगा, गूलर, अमलतास | बेर, रेऊंझा, खैर, सवाई घास, दीनानाथ घास |



| | | | |
|----|----------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------|
| 9 | रेतीली भुरभुरी | सिस्सू, लेंडिया, खैर, कचनार, कपोक, चिरौल, बांस, तेन्दू, बबूल, बीजा, सफेद सिरस, चिरौल, अर्जुन, इमली, सीताफल, अचार, बेर, कदम, महारूख, अमलतास | रेऊंझा, खैर |
| 10 | लाल मुरुमी | सागौन, खमेर, लेंडिया, बांस, आवला, काला सिरस, सफेद सिरस, सिस्सू, करंज, नीम, बांस, बबूल, बड़, कपोक, कदम, पीपल, अर्जुन, बेल, अशोक, इमली, सीताफल, बेर, मुनगा, अमलतास | खैर, बबूल, रेऊंझा, बांस |
| 11 | लाल पीली दोमट | काला सिरस, सफेद सिरस, नीम, बांस, बबूल, करंज, खमेर, शीशम, सेमल, जामुन, अर्जुन, चिरौल, पीला कनेर, बड़, पीपल, बेल, इमली, महुआ, बेर, आवला, मुनगा, मैदा | खैर, रेऊंझा, सवाई घांस, दीनानाथ घास |
| 12 | लाल मिट्टी | सागौन, खमेर, अंजन, शीशम, काला सिरस, नीम, करंज, बांस, लेंडिया, बबूल, सिस्सू, बड़, पीपल, अर्जुन, बेल, इमली, अशोक, महुआ, गूलर, जामुन, बेर, आवला, अमलतास | विलायती बबूल, बबूल, खैर, बांस, करौंदा, पीला कनेर |

वृक्षारोपण हेतु ध्यान में रखने योग्य बातें -

(अ) गड्ढे का आकार एवं रोपण योग्य पौधे की न्यूनतम आयु/ऊंचाई:

नर्मदा नदी के दोनों तटों से लगी भूमि पर रोपित किये जाने वाली विभिन्न प्रकार प्रजातियों के रोपण हेतु गड्ढे का आकार एवं रोपण योग्य पौधे की न्यूनतम आयु/ऊंचाई का उल्लेख निम्नलिखित तालिका में किया गया है। अधिक ऊंचाई के पौधे या बड़े आकार के पालीबेग होने पर गड्ढे का आकार बढ़ाया भी जा सकता है। ध्यान में रखने योग्य बात यह है कि पौधे कि जड़े पूर्णतः जमीन के अंदर हो जाये।

तालिका 2- रोपण हेतु गड्ढे का आकार एवं पौधे की न्यूनतम आयु/ऊंचाई

| क्रं. | प्रजातियाँ | गड्ढे का उपयुक्त आकार | रोपण योग्य पौधे की उपयुक्त आयु/ऊंचाई (न्यूनतम) |
|-------|---------------------------------------------|-----------------------|------------------------------------------------|
| 1. | सीता अशोक (<i>Sarraca indica</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1 से 1.5 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 2. | अमलतास (<i>Cassia fistula</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1 से 1.5 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 3. | अचार (चिरौंजी) (<i>Buchanania lanzan</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1.5 से 2 वर्ष / 1.5 से 2 फीट |
| 4. | आंवला (<i>Emblca officinalis</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1 से 1.5 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 5. | अंजन (<i>Hardwickia binata</i>) | 45 X45X45 से.मी. | 1.5 से 2 वर्ष / 1.5 से 2 फीट |



॥नमामि देवी नर्मदे॥

| | | | |
|-----|------------------------------------------------|------------------|----------------------------------------------------------------------------|
| 6. | इमली (<i>Tamarindus indica</i>) | 45 X45X45 से.मी. | 1 से 1.5 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 7. | करंज (<i>Pongamia pinnata</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1 से 1.5 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 8. | काला सिरस (<i>Albizzia lebbeck</i>) | 45 X45X45 से.मी. | 1 से 1.5 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 9. | कचनार (<i>Bauhinia variegata</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 10. | खमेर (<i>Gmelina arborea</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1 से 2 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 11. | खैर (<i>Acacia catechu</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1.5 से 2 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 12. | गुलर (<i>Ficus glomerata</i>) | 45 X45X45 से.मी. | 1 से 2 वर्ष / 2.5 से 4 फीट |
| 13. | चिरौल (<i>Holoptelea integrifolia</i>) | 45 X45X45 से.मी. | 1 से 1.5 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 14. | जामुन (<i>Syzygium cuminii</i>) | 45 X45X45 से.मी. | 1 से 2 वर्ष / 2 से 4 फीट |
| 15. | तिन्सा (<i>Ougeinia oojeinensis</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1.5 से 2 वर्ष / 1.5 से 2 फीट |
| 16. | नीम (<i>Azadirachta indica</i>) | 45 X45X45 से.मी. | 1 से 2 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 17. | पारस पीपल (<i>Thespesia pypulnea</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 18. | पीला कनेर (<i>Thevetia nerifolia</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 19. | पीपल (<i>Ficus religiosa</i>) | 45 X45X45 से.मी. | 1.5 से 2 वर्ष / 2 से 4 फीट |
| 20. | बबूल (<i>Acacia nilotica</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1 से 1.5 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 21. | बांस (<i>Dendrocalamus strictus</i>) | 45 X45X45 से.मी. | 1.5 से 2 वर्ष / 2.5 से 3 फीट कंद विकसित होने पर ही रोपण करना चाहिये। |
| 22. | बीजा (<i>Pterocarpus marsupium</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1.5 से 2 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 23. | बेर (<i>Zizyphus jujuba</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1.5 से 2 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 24. | बरगद (<i>Ficus bengalensis</i>) | 45 X45X45 से.मी. | 2 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 25. | महुआ (<i>Madhuca latifolia</i>) | 45 X45X45 से.मी. | 1.5 से 2 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 26. | महारुख (<i>Ailanthus excelsa</i>) | 45 X45X45 से.मी. | 1 से 1.5 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 27. | मुनगा (<i>Moringa pteryosperna</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1.5 से 2 वर्ष / 1.5 से 2 फीट |
| 28. | मौलश्री, मौलसरी (<i>Mimusops elengii</i>) | 45 X45X45 से.मी. | 1.5 से 2 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 29. | रेऊंझा (<i>Acacia leucophloea</i>) | 45 X45X45 से.मी. | 1.5 से 2 वर्ष / 1.5 से 2 फीट |
| 30. | लैंडिया (<i>Lagerstoemia parviflora</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1.5 से 2 वर्ष / 2 से 3 फीट |



| | | | |
|-----|----------------------------------------------------------|------------------|----------------------------------------------------------------------|
| 31. | शीशम (रोजवुड) (<i>Dalbergia latifolia</i>) | 45 X45X45 से.मी. | 1.5 से 2 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 32. | सफेद सिरस (<i>Albizzia procera</i>) | 45 X45X45 से.मी. | 1 से 1.5 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 33. | सागौन (<i>Tectona grandis</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1 से 2 वर्ष / 2 से 3 फीट अथवा रुट-शूट के द्वारा रोपण करे। |
| 34. | साजा (<i>Terminalia tomentosa</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1.5 से 2 वर्ष / 1.5 से 2 फीट |
| 35. | सेमल (<i>Bombax ceiba</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 8 माह से 1 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 36. | सिस्सू (<i>Dalbergia sissoo</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1 से 1.5 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 37. | सीताफल (<i>Annona squamosa</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1.5 से 2 वर्ष / 1.5 से 2 फीट |
| 38. | हर्रा (<i>Terminalia chebula</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1.5 से 2 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 39. | बहेड़ा (<i>Terminalia belerica</i>) | 45 X45X45 से.मी. | 1.5 से 2 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 40. | कूल्लू (<i>Sterculia uiens</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1.5 से 2 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 41. | अर्जुन (<i>Terminalia arjuna</i>) | 45 X45X45 से.मी. | 1.5 से 2 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 42. | कदम (<i>Anthocephalus cadamba</i>) | 45 X45X45 से.मी. | 1 से 1.5 वर्ष / 2 से 3 फीट |
| 43. | कपोक – सीबा पेटेन्द्रा (<i>Cieba pentandra</i>) | 45 X45X45 से.मी. | 8 माह से 1 वर्ष / 2 से 2 फीट |
| 44. | बेल – ईगल मार्मिलोस (<i>Aegle marmelos</i>) | 45 X45X45 से.मी. | 2 से 2.5 वर्ष / 1.5 से 2.5 फीट जब तीन पत्तियाँ एक साथ आने लगे। |
| 45. | मैदा – लिटसिया ग्लूटिनोसा (<i>Litsea glutinosa</i>) | 30 X30X30 से.मी. | 1.5 से 2 वर्ष / 1.5 से 2 फीट |

(ब) वृक्षारोपण हेतु गड्ढे का आकार –

सामान्यतः वृक्षारोपण हेतु दो आकार के गड्ढे किये जाने चाहिये ।

- लम्बाई, चौड़ाई एवं गहराई 30 x 30 x 30 से.मी. छोटे एवं मध्यम आकार के वृक्षों का रोपण करने हेतु इस आकार के गड्ढे करना चाहिये ।
- लम्बाई, चौड़ाई एवं गहराई 45 x 45 x 45 से.मी. बड़े आकार के वृक्षों एवं बांस हेतु इस आकार के गड्ढे करना चाहिये ।



- बड़ी पॉलीथीन वाले पौधों हेतु गड्ढों का आकार भी बड़ा रखना चाहिये जिससे संपूर्ण जड़ जमीन के अंदर हो जाये ।

(स) गड्ढें में डालने के लिये मिट्टी का मिश्रण तैयार करना –

पौधा लगाते समय 2 भाग मिट्टी एवं 1 भाग गोबर खाद का मिश्रण तैयार करना चाहिये। गोबर खाद पूर्ण रूप से पकी होना चाहिये अन्यथा दीमक का प्रकोप हो सकता है। पौधा रोपण से पूर्व लगभग 1–2 इंच मिश्रण पहले से ही गड्ढे में डाल के रखना चाहिये।

पॉलीथीन से पौधा निकालकर गड्ढे में लगाना –

पौधा रोपण के समय एक हाथ की हथेली पर पौधे की पॉलीथीन को रखकर तेज धार वाले ब्लेड से पॉलीथीन को लंबवत चीरा लगाना चाहिये एवं सावधानी पूर्वक पॉलीथीन को हटा लेना चाहिये।

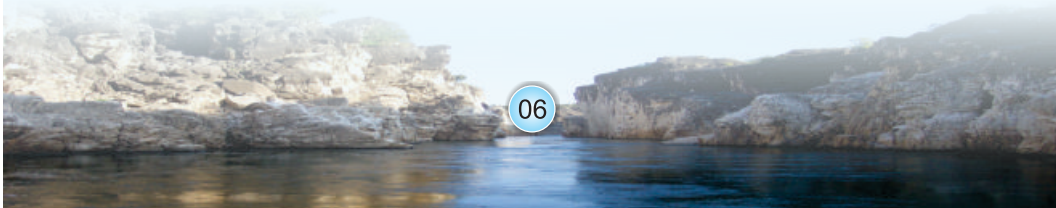
पौधे को गड्ढे में धीरे से रखना चाहिये और चारों तरफ से मिश्रण भर देना चाहिये। मिश्रण को जमीन की सतह से 2 से 3 इंच ऊपर तक भरकर उसे दबाना चाहिये।

विशेष – पौधों से निकली पॉलीथीन को अलग से एक स्थान पर धागे की माला में पिरोकर रखना चाहिये इन्हें यहाँ-वहाँ फेंकना नहीं चाहिये।

नर्मदा के तटीय किनारों के वन क्षेत्र, कृषि क्षेत्र, खेतों की मेड़, सामुदायिक क्षेत्र, पड़त भूमि क्षेत्र आदि में वृक्षारोपण किये जाने हेतु उपयुक्त प्रजातियाँ जो कि शोभादार एवं छायादार वृक्षों के रूप में रोपित किये जा सकते हैं तथा वे व्यापारिक एवं आर्थिक रूप से उपयोग किये जा सकते हैं का उल्लेख प्रजातिवार निम्नानुसार है:-

(1) सीता अशोक – सराका इंडिका (*Sarraca indica*)

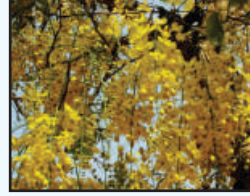
यह मध्यम आकार का सदाहरित, कुछ अनिश्चित आकार व चटकीले रंग की संयुक्त पत्तियों और घने छत्र वाला वृक्ष होता है। इस वृक्ष की महत्वपूर्ण बात यह है कि इसके लाल रंग के पुष्प मधुर सुगन्धित होते हैं। यह वृक्ष प्रजाति नम स्थानों पर अच्छी तरह लगायी जा सकती है।





(2) अमलतास – केसिया फिस्टुला (*Cassia fistula*)

यह मध्यम आकार का सुन्दर वृक्ष है। यह अनेक प्रकार के शैल समूह तथा उथली जमीन में भी पाया जाता है। यह पर्णपाती वनों में पाया जाता है। इसे शोभादार वृक्ष के रूप में लगाया जा सकता है।



(3) अचार (चिरौंजी) – बुकनानिया लेन्जान (*Buchanania lanzan*)

यह मध्यम आकार का गोलाकार छत्र वाला वृक्ष है। म.प्र. के सभी जिलों में पाया जाता है। यह सदाबहार फलदार वृक्ष होता है। इसके बीज व्यापारिक एवं आर्थिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हैं। इसके बीजों को खाने एवं मिठाई बनाने में उपयोग किया जाता है। इसे खेतों की मेड़ पर भी लगाया जा सकता है।



(4) आंवला – एम्बेलिका ऑफिसिनेलिस (*Emblica officinalis*)

आंवला मध्यम आकार की महत्वपूर्ण फलदार औषधीय प्रजाति है, जो कि सम्पूर्ण भारत में हर प्रकार के वनों में पायी जाती है। आंवला के फल का अचार, जैली, मुरब्बा तथा आयुर्वेदिक दवाइयों में विशेष महत्व है। मध्यप्रदेश में प्रमुख रूप से पन्ना, छतरपुर, बैतूल, सतना, सिवनी, बालाघाट, मण्डला, सागर एवं शिवपुरी के मिश्रित वनों में अधिक पाया जाता है। इसे खेत की मेड़ या संपूर्ण खेत में भी लगाया जा सकता है।



(5) अंजन – हार्डबिकिया बाइनेटा (*Hardwickia binata*)

यह मध्यम से बड़े आकार का वृक्ष होता है। इसकी पत्तियां पशुओं को खिलाते हैं। स्थानों के अनुसार इसका आकार भी अलग-अलग होता है। यह 9-12 मीटर ऊंचा तथा 90 से.मी. गोलाई का होता है। कांग्लोमरेट, क्वार्टजाइट एवं ग्रेनाइट पर भी गहरी रेतीली जमीन में यह 24 से 30 मी. ऊंचा तथा 2-3 मीटर तक गोलाई का होता है। मालवा क्षेत्र में इसका रोपण प्राथमिकता से किया जाना चाहिये।





**(6) इमली – टेमेरिन्डस इन्डिका
(*Tamarindus indica*)**

यह एक वृहदाकार, लगभग सदाहरित, धीमी वृद्धि वाला वृक्ष है। इसके लिए किसी भूमि विशेष की आवश्यकता नहीं है तथापि गहरी जलोढ़ भूमि में सबसे अच्छा होता है। इसके रोपण से पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ आर्थिक लाभ भी होता है। इसके रोपण से पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ आर्थिक लाभ भी होता है।



(7) करंज – पोंगामिया पिन्नेटा (*Pongamia pinnata*)

करंज विभिन्न तरह की मृदा में पाया जाता है। सड़क के किनारे काफी मात्रा में वृक्षारोपण किया गया है। यह एक घनी छाया प्रदाय करने वाला वृक्ष है इसके फलों का संग्रहण औषधीय निर्माण तथा तेल उत्पादन के लिये होता है। इसे खेत की मेड़ अथवा सड़क के दोनों तरफ लगाया जा सकता है।



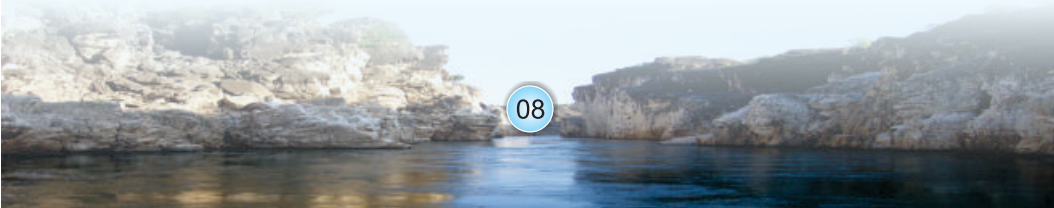
(8) काला सिरस – अलबीजिया लेबेक (*Albizia lebeck*)

यह मध्यप्रदेश के मिश्रित वनों में अक्सर पाया जाता है। सड़क के किनारे रोपण में काफी मात्रा में रोपित किया गया है। यह मिश्रित एवं पर्णपाती वनों की दो स्थितियों शुष्क एवं आर्द्र प्रकार में यदा-कदा पाया जाता है।



(9) कचनार – बोहिनिया वेरीगेटा (*Bauhinia variegata*)

यह मध्यम आकार का सुन्दर वृक्ष होता है। इसका छत्र फैला हुआ होता है। पत्तियां दो भागों में होती हैं। फूल सफेद बैंगनी रंग के होते हैं। यह वृक्ष मिश्रित पर्णपाती शुष्क वनों में पाया जाता है। इसकी पत्तियों का उपयोग चारे एवं भोजन के रूप में किया जाता है।





(10) खमेर – मेलाइना अरबोरिया (*Gmelina arborea*)

यह तेजी से बढ़ने वाला वृक्ष है एवं शुष्क (ड्राई), अर्द्धशुष्क (सेमी ड्राई) एवं आर्द्र तरह की जलवायु में पाया जाता है। यह भारत में मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र एवं भारत के अलावा थाईलैण्ड, नेपाल, भूटान, पाकिस्तान, फिलीपीन्स, इन्डोनेशिया जैसे विश्व के अनेक देशों में पाया जाता है। इसे खेतों की मेड़ पर अथवा सम्पूर्ण खेत में आर्थिक लाभ की दृष्टि से भी लगाया जा सकता है।



(11) खैर – अकेसिया कटेचू (*Acacia catechu*)

भारत के अधिकांश क्षेत्र में पाया जाता है। मुख्यतः उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, उड़ीसा, गुजरात एवं आंध्रप्रदेश में पाया जाता है। यह प्रजाति मुख्यतः सूखे प्रकार के वन क्षेत्रों में पायी जाती है। म.प्र. में बालाघाट, भोपाल, छिन्दवाड़ा, पूर्व निमाड़, ग्वालियर, होशंगाबाद, इंदौर, जबलपुर, मण्डला, पन्ना, राजगढ़, रायसेन, सागर, सतना, शिवपुरी, सीधी में यह पाया जाता है। इसे शुष्क स्थान पर भी लगाया जा सकता है



(12) गूलर – फाइकस ग्लोमेरेटा (*Ficus glomerata*)

यह मध्यम व वृहद् आकार का वृक्ष होता है। आमतौर पर जंगलों में पानी के स्रोत के पास पाया जाता है। कभी-कभी पहाड़ियों की ढलान पर समूह में मिलता है। यह सदाबहार, फलदार एवं ठंडक देने वाला वृक्ष है। इसके फल कई पशु पक्षियों के भोजन के लिये उपयोगी है तथा पत्तियां चारे के रूप में भी उपयोग में लायी जाती है।



(13) चिरौल – होलोप्टेलिया इन्टेग्रीफोलिया (*Holoptelea integrifolia*)

यह मिश्रित वनों में पाया जाने वाला वृक्ष है। यह पड़त भूमि में लगाने के लिये उपयुक्त है।





इसकी लकड़ी कृषि औजार बनाने तथा जलाऊ के लिये उपयोगी है। इसके बीजों से तेल भी निकाला जा सकता है।

(14) जामुन – साइजीजियम क्यूमिनी (*Syzygium cuminii*)

यह एक वृहद् आकार का घनी छांव वाले छत्र का गहरी चमकीली पत्तियों वाला वृक्ष होता है। आमतौर पर वनों में नमी वाले स्थानों पर पाया जाता है। यह औषधीय महत्व का फलदार वृक्ष होता है। इसकी पत्तियाँ चारे के रूप में उपयोग की जा सकती है।



(15) तिन्सा – ओजीनिया ऑजेनेंसिस (*Ougeinia oojeinensis*)

यह एक मध्यम आकार का पर्णपाती वृक्ष है। यह मिश्रित पर्णपाती एवं साल के वनों में बहुतायत में पाया जाता है। यह बालाघाट, भोपाल, छिन्दवाड़ा, ग्वालियर, इन्दौर, जबलपुर, मण्डला, पन्ना रायसेन, सागर, सिवनी, शहडोल में पाया जाता है।



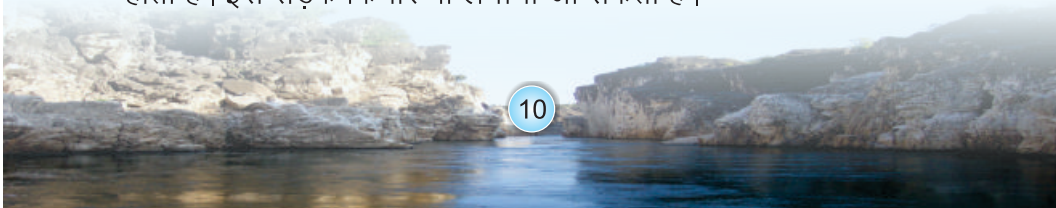
(16) नीम – एजेडिरक्टा इन्डिका (*Azadirachta Indica*)

यह सदाहरित वृक्ष है। यह सामान्यतः सभी प्रकार की मिट्टियों में होता है, परन्तु काली कपासीय मिट्टी में बहुत अच्छा होता है। यह पथरीली, कम पानी वाली, कैलकेटियम एवं बीहड़ में रोपण के लिए उपयुक्त प्रजाति है। यह एक छायादार औषधीय बहुउपयोगी वृक्ष है। इसे नदी एवं सड़क के किनारे लगाया जा सकता है।



(17) पारस पीपल– थेसपीसिया पाइपुल्लिया (*Thespesia pypulnea*)

यह छोटे आकार का सदैव हरित, तीव्रता से बढ़ने वाला, घनी पत्तियों वाला वृक्ष है। यह हल्की तथा रन्ध्रयुक्त भूमि में अच्छा होता है। यह औषधीय महत्व का शोभादार एवं छायादार वृक्ष होता है। इसे सड़क किनारे भी लगाया जा सकता है।





(18) पीला कनेर – थिवेटिया नेरिफोलिया (*Thevetia neriifolia*)

यह एक वृहदाकार झाड़ी अथवा लघु आकार का वृक्ष है। इसकी पत्तियां पीलापन लिये होती हैं। यह बहुत ही सहिष्णु प्रजाति है तथा किसी भी प्रकार की भूमि पर उग सकती है। इसके फूलों को पूजा के लिये उपयोग में लाते हैं। अतः धार्मिक स्थानों पर भी इसका रोपण किया जा सकता है।



(19) पीपल – फाईक्स रिलिजीओसा (*Ficus religiosa*)

यह एक पर्णपाती विशाल छायादार वृक्ष है। यह प्रायः सभी स्थानों पर विशेष कर जल एवं धार्मिक स्थलों पर पाया जाता है। यह एक बहुउपयोगी धार्मिक वृक्ष है जिसे धार्मिक स्थलों पर रोपित किया जा सकता है। यह एक घना छायादार वृक्ष होता है जो कि विभिन्न प्रकार के पक्षी प्रजातियों का आश्रय स्थल बनता है।



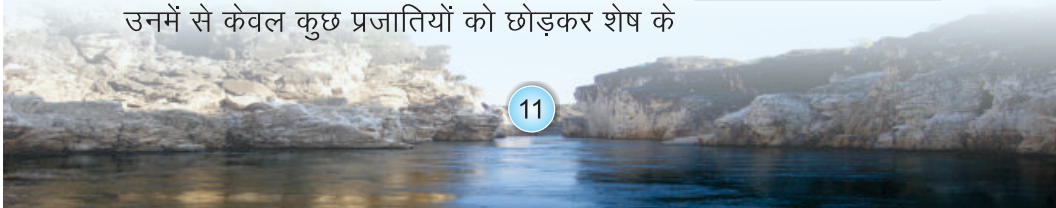
(20) बबूल – एकेसिया नीलोटिका (*Acacia nilotica*)

यह भारत, अरेबियन देश एवं अफ्रीका मूल (Native) का है, भारत में यह मुख्यतः राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश में पाया जाता है। यह एक बहुउपयोगी औषधीय महत्व का वृक्ष है। इसकी पत्तियाँ चारे के रूप में उपयोग की जाती हैं।



(21) बांस – डेन्द्रोकेलेमस स्ट्रिक्टस (*Dendrocalamus strictus*)

भारत में प्रायः सभी राज्यों में बांस के वन हैं। म.प्र. में बांस के वन होशंगाबाद, बैतूल, सीधी, उमरिया, पन्ना, जबलपुर, झाबुआ, सिहोर, सतना जिले में पाये जाते हैं। भारत में पायी जाने वाली बांस प्रजातियों की संख्या लगभग 100 है परन्तु उनमें से केवल कुछ प्रजातियों को छोड़कर शेष के





क्षेत्र सीमित हैं। म.प्र. में पायी जाने वाली बांस की अन्य प्रजातियाँ निम्नलिखित हैं – कटंग बांस (बेम्बूसा अरुन्डीनेशिया), पीला बांस (बेम्बूसा वलगेरिस), बेम्बूसा न्यूटन्स। बांस की सभी प्रजातियाँ मिट्टी के कटाव एवं बहाव को रोकने के लिये रोपित की जा सकती है।

(22) बीजा – टेरोकार्पस मारसूपियम (*Pterocarpus marsupium*)

यह एक पर्णपाती वृक्ष है। भारत में यह गुजरात, महाराष्ट्र, उड़ीसा, बिहार एवं उत्तर प्रदेश के तराई इलाके एवं दक्षिण भारत में पाया जाता है। मध्यप्रदेश में मुख्यतः धार, इंदौर, गुना, शिवपुरी, सीधी, शहडोल, उमरिया, बैतूल, सिवनी, बालाघाट, भोपाल, छिन्दवाड़ा, दमोह, ग्वालियर, जबलपुर, मण्डला, रायसेन, रीवा, सागर आदि जिलों में पाया जाता है। यह रेतीली मिट्टी में अच्छी वृद्धि करता है। यह अधिकांशतः रेतीली एवं दोमट मृदा में पाया जाता है।



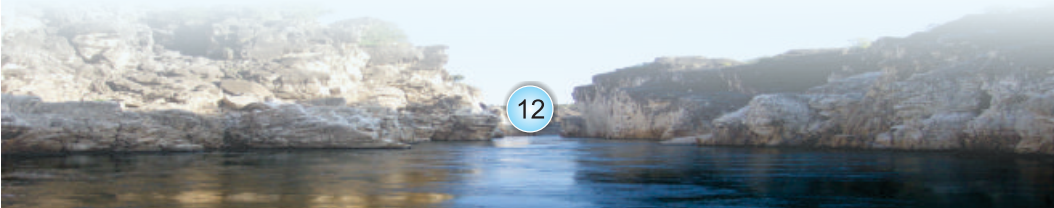
(23) बेर – जिजीफस जुजुबा (*Zizyphus jujuba*)

यह एक छोटे अथवा मध्यम आकार का पर्णपाती (लगभग सदैव हरित) वृक्ष है। शुष्क क्षेत्रों में इसकी लकड़ी ईंधन तथा छोटी इमारती के काम में लायी जाती है, तथा कांटेदार तने खेतों की बाड़ बनाने के काम आते हैं। अधिक चराई वाले क्षेत्रों में यह अन्य पौधों को पनपने में सहायता करता है। इसकी जड़े मिट्टी के कटाव को रोकने में सहायक होती है।



(24) बरगद – फाइकस बेंगालेन्सिस (*Ficus bengalensis*)

यह वृहद् आकार का सदाहरित छायादार वृक्ष होता है। यह शुष्क जगह में पाया जाता है। इसकी पत्तियां चमकीली होती हैं वृक्ष में हल्का घाव करने पर दूध निकलता है। यह एक घना छायादार वृक्ष होता है जो कि विभिन्न प्रकार के पक्षी प्रजातियों का आश्रय स्थल बनता है।





(25) महुआ – मधुका लेटीफोलिया (*Madhuca latifolia*)

महुआ का वृक्ष साल, सागौन के समान मध्यप्रदेश के वनों में प्रचुरता से पाया जाता है। इसके वृक्ष की औसत ऊँचाई 10 से 12 मीटर होती है एवं अधिकतम गोलाई 100 से 200 से.मी. तक होती है, वृक्ष में विकसित छत्र होता है। यह भारत में सभी जगह पाये जाते हैं। यह सभी प्रकार की मृदा में वृद्धि करते हैं परन्तु रेतीली, पथरीली मिट्टी में इनकी बढ़त अच्छी होती है। इसके वृक्षों को अधिक प्रकाश की आवश्यकता होती है, छायावाले स्थान में कम वृद्धि होती है। आदिवासियों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने में इसका महत्वपूर्ण योगदान है।



(26) महारुख – एलीएन्थस एक्सेल्सा (*Ailanthus excelsa*)

यह वृहदाकार वृक्ष होता है। इसके तने की छाल हल्के रंग की होती है। इसकी संयुक्त पत्तियाँ 10 से 13 जोड़ी कटावदार पर्णक वाली होती हैं। यह तेजी से बढ़ने वाली प्रजाति है।



(27) मुनगा – मोरिंगा टेरिगोस्पेर्मा (*Moringa pterygorperma*)

यह मध्यम आकार का वृक्ष होता है। इसकी लकड़ी बहुत नरम तथा हल्की होती है। मीठे किस्म के फल की सब्जी बनाते हैं। शाखायें एवं नयी पत्तियाँ पशुओं के चारे के काम आती हैं। इसका रोपण खेतों एवं खेतों की मेढ़ों पर किया जा सकता है। इसके वृक्षारोपण से आर्थिक आमदनी प्राप्त कि जा सकती है। यह कुपोषण हटाने में मददगार प्रजाति है।



(28) मौलश्री, मोलसरी – मायमुसोप्स एलेन्जाइ (*Mimusops elengii*)

यह मध्यम से वृहद् आकार का घने छत्र वाला छायादार वृक्ष होता है। पत्तियाँ चमकीली तथा लहरदार किनारों वाली होती है। इसे शोभा के लिये लगाते हैं। यह एक घना छायादार वृक्ष होता

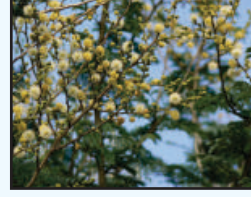




है, जो कि विभिन्न प्रकार के पक्षी प्रजातियों का आश्रय होता है। इसके फल खाये जाते हैं।

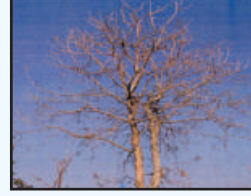
(29) रेऊंझा – अकेशिया ल्यूकोफलोइया
(*Acacia leucophloea*)

यह कंटीला पर्णपाती वृक्ष है। यह बंजर, कम वर्षा और शुष्क क्षेत्र में मुख्यतः खुले कंटीले, झाड़ी वाले वन में पाया जाता है। इसका रोपण शुष्क स्थान में किया जा सकता है।



(30) लेंडिया – लेगरस्ट्रोमिया पारवीफ्लोरा
(*Lagerstroemia parviflora*)

सामान्यतः यह संपूर्ण मध्य प्रदेश में पाया जाता है। यह एक तीव्र गति से वृद्धि करने वाला वृक्ष होता है, जो कि मैदानी इलाकों एवं पड़त भूमि पर भी लगाया जा सकता है।



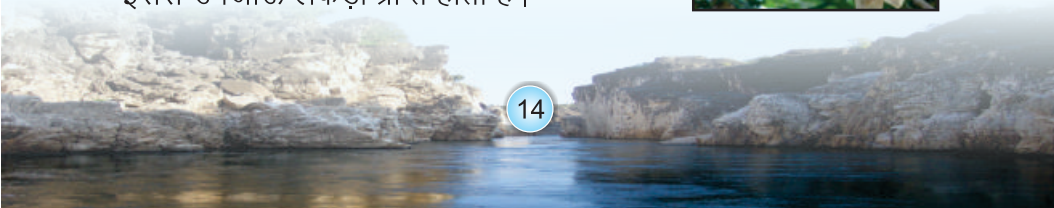
(31) शीशम (रोजवुड) – डलबरजिया लेटीफोलिया
(*Dalbergia latifolia*)

सामान्यतः यह पर्णपाती वनों में सागौन के साथ पाया जाता है। यह अनेक प्रकार के शैल समूहों जैसे नीस, लेटेराइट, पथरीली तथा जलोढ़ मिट्टी पर प्राकृतिक रूप से उगता है। यह पानी के स्रोत के पास गहरी तथा नम जल निकासी वाली जगह में अच्छी वृद्धि करता है।



(32) सफेद सिरस – अलबीजिया प्रोसेरा
(*Albizzia procera*)

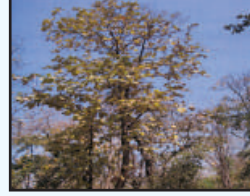
यह मध्यप्रदेश में सभी जगह पायी जाती है। इसके लिये किण्विकामय मिट्टी अच्छी होती है। यह पोषक मिट्टी में तेजी से वृद्धि करता है तथा अधिक ऊंचाई प्राप्त करता है। परिपक्व होने पर इससे उपजाऊ लकड़ी प्राप्त होती है।





(33) सागौन – टेक्टोना ग्रांडिस (*Tectona grandis*)

सागौन एक विशालकाय पर्णपाती वृक्ष है जो मुख्यतः मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, गुजरात, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा एवं राजस्थान राज्यों में पाया जाता है। इस वृक्ष की लकड़ी अत्यधिक मजबूत एवं चमकदार होती है जिस कारण से इससे फर्नीचर, दरवाजे, बल्ली आदि बनाने में उपयोग किया जाता है। इसे शुष्क, भूमि में भी लगाया सकता है। खेतों की मेढ़ पर लगाकर इससे अतिरिक्त आमदनी प्राप्त की जा सकती है।



(34) साजा – टर्मिनेलिया टोमेन्टोसा (*Terminalia tomentosa*)

यह एक वृहदाकार पर्णपाती लम्बे, सीधे तथा भरे छत्र वाला वृक्ष है। इसकी औसत ऊँचाई 30 से 32 मीटर तक होती है। यह अधिकांश मिश्रित वनों में पाया जाता है। यह भिन्न-भिन्न प्रकार की भूमि पर, किसी विशेष प्राथमिकता दिये बिना उगाया जा सकता है, परन्तु जलोढ़ (Water logged), गहरी भूमि में वृहदतम आकार प्राप्त करता है। क्षीण एवं उथली भूमि में इसकी वृद्धि कम होती है।



(35) सेमल – बोम्बेक्स सिबा (*Bombax ceiba*)

यह एक विशाल काटेदार वृक्ष होता है, इसके वृक्ष की पत्तियाँ 5-7 तक गुच्छों में होती हैं। यह दोमट, लाल, भुरभुरी व अच्छे जल निवास वाली भूमि में होता है। यह एक तीव्र वृद्धि करने वाला वृक्ष है तथा पक्षियों एवं मधु मक्खियों के लिये यह आश्रय एवं भोजन प्रदान करता है।



(36) सिस्सू – डलबरजिया सिस्सू (*Dalbergia sissoo*)

यह कम वर्षा वाले क्षेत्र तथा रेतीली एवं दोमट मिट्टी में उगाया जा सकता है। फर्नीचर बनाने तथा नक्काशीदार काम करने में लकड़ी का उपयोग किया जाता है। ईंधन में पत्तियों का उपयोग चारा के रूप में किया जाता है। जमीन की





उर्वरकता बढ़ाने के लिये उपयोगी होता है। इसकी जड़ के द्वारा भी पौधे तैयार किये जा सकते हैं। यह एक छायादार वृक्ष होता है।

(37) सीताफल – एनोना स्क्वामोसा (*Annona squamosa*)

यह एक छोटे आकार का झाड़ीनुमा फलदार पेड़ होता है। यह प्रजाति अनेक प्रकार के शैल समूहों जैसे— ग्रेनाइट, नीस, ट्रेप आदि में पायी जाती है। पथरीली एवं पहाड़ी जमीन में भी यह उगाया जा सकता है। इसको, गाय, बकरी, आदि नहीं खाते हैं। इसलिये बहुतायत में चरे जाने वाले क्षेत्रों में भी लगाया जाता है। यह एक बहुउपयोगी एवं आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण पौधा है।



(38) हर्रा – टर्मिनेलिया चेबुला (*Terminalia chebula*)

यह मिश्रित वनों में पाया जाता है। इसमें पुष्प मार्च से अगस्त माह तक होता है। इसमें फल नवम्बर से मार्च तक आते हैं। परिपक्व नम भूमि में इसका पौधा तेजी से बढ़ता है। फलों का संग्रहण जनवरी से अप्रैल तक किया जाता है। इसके बीज की जीवितता एक वर्ष होती है।



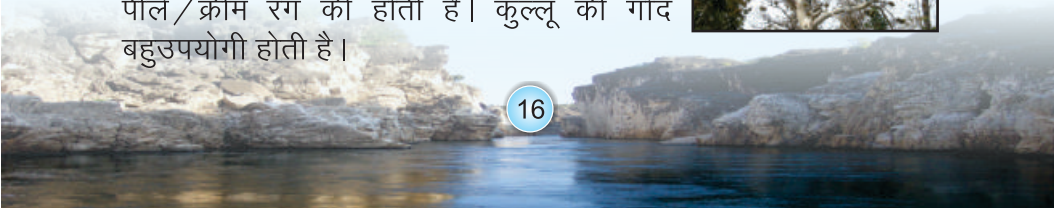
(39) बहेड़ा – टर्मिनेलिया बेलेरिका (*Terminalia belerica*)

मध्यप्रदेश में यह बालाघाट, होशंगाबाद, देवास, धार, सीधी एवं उमरिया में पाया जाता है। यह सागौन, साल एवं मिश्रित पर्णपाती वनों एवं अनेकों किस्म की मिट्टी में पाया जाता है। रेतीली, दोमट, काली कपासी, दोमट मिट्टी में अच्छी बढ़त होती है। इसके फल औषधीय महत्व के होते हैं।



(40) कुल्लू – स्टर्कूलिया यूरेन्स (*Sterculia uiens*)

यह मध्यप्रदेश में बहुतायत से पाया जाता है। इस वृक्ष की ऊँचाई 12 से 15 मीटर एवं गोलाई 60 से 100 से.मी. तक होती है। इसकी छाल धूसर भूरे रंग की होती है एवं इसकी लकड़ी हल्के पीले/क्रीम रंग की होती है। कुल्लू की गोंद बहुउपयोगी होती है।





(41) अर्जुन – टर्मिनेलिया अर्जुना (*Terminalia arjuna*)

सामान्यत यह नदी, नालों के किनारे पानी एकत्र होने वाले क्षेत्र, सड़क के किनारे तथा अधिक आर्द्रता वाले क्षेत्र में पाया जाता है। इस वृक्ष की ऊँचाई 15 से 25 मीटर तक एवं गोलाई 100 से 200 से.मी. तक होती है। इसमें फूल अप्रैल से जुलाई तक आते हैं। इसकी छाल का उपयोग औषधी निर्माण में किया जाता है।



(42) कदम्ब – एन्थोसिफेलस कदम्बा (*Anthocephalus cadamba*)

यह शीघ्र वृद्धि वाला वृक्ष है। यह सुन्दरता हेतु किये जाने वाले रोपण के लिए उपयुक्त है। नदी एवं सड़क किनारे इसका रोपण किया जा सकता है।



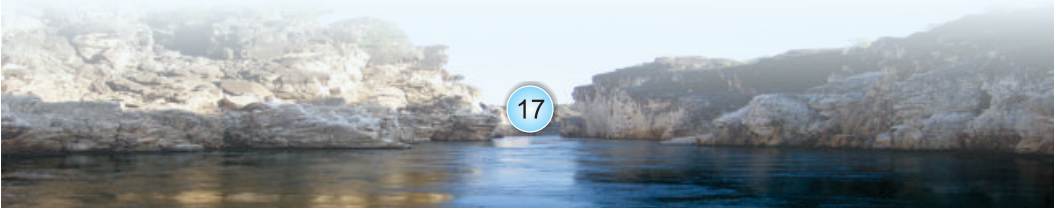
(43) कपोक – सीबा पेटेन्द्रा (*Cieba pentandra*)

यह मध्यम आकार का हरे तने वाला सुन्दर वृक्ष है। इसे शोभा के लिये लगाते हैं। इससे कपास प्राप्त होता है। यह तेजी से बढ़ने वाली प्रजाति है।



(44) बेल – ईगल मारमिलोस (*Aegle marmelos*)

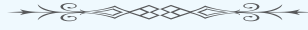
बेल सूखे पहाड़ी क्षेत्रों एवं साल, सागौन तथा मिश्रित पर्णपाती एवं शुष्क वनों में पाया जाता है। गैर-काष्ठीय वनोपज की दृष्टि से बेल अति महत्वपूर्ण प्रजाति हैं। बेल के फल एवं पत्ती औषधीय एवं धार्मिक गुणों के कारण भारत में ऐतिहासिक काल से ही महत्वपूर्ण रहा है। बेल के फल, पत्ती, छाल एवं जड़ सभी उपयोगी होते हैं।





(45) मैदा छाल – लिट्सिया ग्लूटिनोसा (*Litsea glutinosa*)

यह सदाबहार अथवा पर्णपाती वृक्ष है, जिसकी औसत ऊँचाई 3 से 10 मी. तक होती है। मैदा की नयी पत्तियाँ जनवरी-फरवरी में आती हैं। इसकी पत्तियाँ गुच्छे में एकांतरित क्रम में लगी रहती हैं, जो छूने पर मखमली प्रतीत होती हैं, मैदा के फल नवम्बर-दिसम्बर माह में पक जाते हैं। यह सामान्यतः नमी वाली भूमि में अच्छी वृद्धि करता है। इसकी छाल तथा पत्तियों का उपयोग डायरिया तथा पेचिस की दवा के रूप में किया जाता है। बीजों से प्राप्त तेल का उपयोग मोमबत्ती तथा साबुन निर्माण में किया जाता है।



कभी संशय न करो कि विचारशील, प्रतिबद्ध नागरिकों का एक छोटा सा समूह दुनिया बदल सकता है; दरअसल, केवल यही है जिसने कभी कुछ बदला है।

- मार्गरेट मीड

एक देश जो अपनी मिट्टी को नष्ट कर देता है वह खुद को नष्ट कर लेता है। जंगल हमारी भूमि के फेफड़े हैं, वे हमारी हवा को शुद्ध करते हैं और लोगों को नयी ताकत देते हैं।

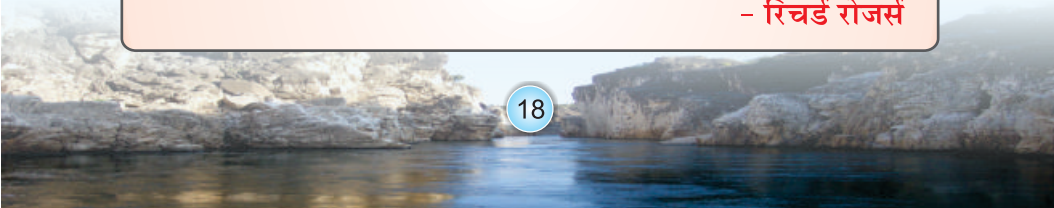
- फ्रैंकलिन डी रूजवेल्ट

हवा और पानी, जंगल और जानवर को बचाने वाली योजनाएँ दरअसल इंसान को बचाने की योजनाएँ हैं।

- स्टीवर्ट उडैल

अगर हमें पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार लाना है तो केवल एक ही तरीका है, सबको शामिल करना।

- रिचर्ड रोजर्स





॥नमामि देवी नर्मदे॥

वृक्षारोपण हेतु गड्ढे एवं थाले के आकार



30X30X30 से.मी.
का गड्ढा

45X45X45 से.मी.
का गड्ढा



अर्धचंद्राकार थाला

जमीन की ढलान

गोल थाला





॥नमामि देवी नर्मदे॥

वृक्षारोपण के विभिन्न चरण



1. क्षेत्र की सफाई



2. गड्ढा खोदना



3. मिट्टी से कंकर पत्थर निकालना



4. मिट्टी में खाद मिलाना



5. पौधे की पॉलीथीन काटना



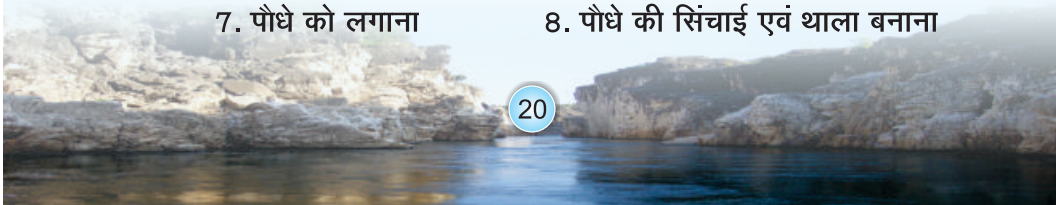
6. पॉलीथीन को पौधे से अलग करना



7. पौधे को लगाना



8. पौधे की सिंचाई एवं थाला बनाना





“नर्मदा मैया जीवन दायिनी है। नर्मदा में जल हमेशा से ही विन्ध्यांचल एवं सतपुडा के घने जंगलों से आता है। इन जंगलों में वृक्ष कम हो रहे हैं जिसका असर नर्मदा में जलधारा पर पड़ रहा है। अमरकंटक से बड़वानी तक नर्मदा के दोनों तटों पर शासकीय भूमि एवं खेतों में पौधे लगाना है। फलदार पौधों के लगाने से किसानों की आय बढ़ेगी और नर्मदा मैया की जलधारा बढ़ेगी।

हम संकल्प लेते हैं कि हम हर साल कम से कम एक पेड़ नर्मदा के तट पर लगायेंगे और नर्मदा मैया को प्रदूषण मुक्त रखेंगे।”

श्री शिवराज सिंह चौहान, माननीय मुख्यमंत्री
के नमामि देवी नर्मदे यात्रा के दौरान पर दिये संदेश का अंश



नर्मदा नदी के द्वारा लाखों आदिवासियों, वन अंचल के वनवासियों, ग्रामीणों एवं किसानों का जीवन यापन होता है। नर्मदा नदी के दोनों तटों पर एक-एक किलोमीटर की दूरी तक वृक्षारोपण किया जाना है ताकि रोपित पौधों से जल संवर्धन एवं मृदा संरक्षण का कार्य किया जा सके।

इस वृहद् वृक्षारोपण के फलस्वरूप नर्मदा नदी की धारा अवरिल होगी साथ ही जनसाधारण के जीवन को स्वस्थ एवं आर्थिक आधार प्राप्त होगा।

आओ हम सब मिलकर संकल्प करें कि नर्मदा के तटों को वृक्षारोपण के माध्यम से और अधिक हराभरा एवं समृद्ध बनायें।

डॉ. गौरीशंकर शिववार
मंत्री, वन, योजना, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग
मध्यप्रदेश शासन

वृक्षारोपण से हरियाली एवं संरक्षण



राज्य वन अनुसंधान संस्थान, जबलपुर (म.प्र.) - 482008
फोन: 0761-2666529, 2665540
E-mail: sdfri@rediffmail.com, Website: <http://www.mpsfri.org>